कबीर साहेब की शब्दावली

(भाग तीसरा)

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

मूल्य ।=)

कबीर साहेब की शब्दावली

॥ भाग ३ ॥

जिस में

उन महात्मा की आदि बानी, आदि धाम की महिमा और चुने हुए शब्द भिन्न भिन्न अंगों में छपे हैं।

और गूढ़ शब्दों के अर्थ भी नोट में लिखे हैं।

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्कस में प्रकाशित हुआ

सन् १९२४ ई०

[दाम ।=)

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीँ थीँ और जो छपी थीँ सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या लेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीँ उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैँ और फुटकल शब्दोँ की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैँ। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियोँ का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीँ छापी गई है, और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है, उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है, और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फुट नोट में लिखा दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात "संतबानी संग्रह" भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महा महोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठवासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के वचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १६१६ में छपी है, जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"यह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है; जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिन में प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई हैं। उनके नाम और दाम सूची से जो कि इस पुस्तक के पीछे है देखिये।

हम ने 'मनोरमा' नामक सचित्र मासिक पत्रिका भी निकालना आरम्भ कर दिया है। साहित्य सेवा के साथ ही साथ मनोरञ्जक लेख कहानियाँ और ऐसे महात्माओं के कवित्त दोहे सवैये जो स्फुट हैं और पुस्तक के रूप में नहीं निकाली जा सकती निरंतर छपती हैं। वार्षिक मूल्य ५) और छः माही ३) है।

मनेजर बेलवेडियर छापाख़ाना।

अक्टूबर सन् १६२४ ई०   इलाहाबाद।

॥ सूचीपत्र ॥

सूचीपत्र

कबीर साहिब की शब्दावली

॥ तीसरा भाग ॥

॥ आदि बानी ॥

बलिहारी अपने साहिब की, जिन यह जुक्ति बनाई ।
उनकी सोभा केहि बिधि कहिये, मो से कही न जाई ॥१॥
बिना जोत की जहँ उँजियारी, सो दरसै वह दीपा ।
निरतैं हंस करैं कंतूहल, वोही पुरुष समीपा ॥२॥
झलकै पद्म नाना बिधि बानी, माथे छत्र बिराजै ।
कोटिन भानु चन्द्र की क्रांती, रोम रोम मैं छाजै ॥३॥
कर गहि बिहँसि जबै मुख बोले, तब हंसा सुख पावै ।
अंस बंस जिन बूझि बिचारी, सो जीवन मुक्तावै ॥४॥
चौदह लोक बेद का मंडल, तहँ लगि काल दुहाई ।
लोक बेद जिन फंदा काटी, ते वह लोक सिधाई ॥५॥
सात सिकारी चौदह पारिंद[१] , भिन्न भिन्न निरतावै ।
चार अंस जिन समुझि बिचारी, सो जीवन मुक्तावै ॥६॥
चौदह लोक बसै जम चौदह, तहँ लगि काल पसारा ।
ता के आगे जोति निरंजन, बैठे सून्य मँझारा ॥७॥
सोरह खंड अच्छर भगवाना, जिन यह सृष्टि उपाई ।
अच्छर कला से सृष्टी उपजी, उनहीं माहिं समाई ॥८॥
सत्रह संख पै अधर द्वीप जहँ, सब्दातीत[२] बिराजै ।
निरतै संखी बहु बिधि सोभा, अनहद बाजा बाजै ॥९॥

ता के ऊपर परम धाम है, मरम न कोऊ पाया ।
जो हम कही नहीं कोउ मानै, ना कोउ दूसर आया ॥१०॥
बेदन साखी सब जिव अरुझे, परम धाम ठहराया ।
फिर फिर भटके आप चतुर होइ, वह घर काहु न पाया ॥११॥
जो कोइ होइ सत्य का किनका, सो हम को पतियाई ।
और न मिले कोटि कहि थाके, बहुरि काल घर जाई ॥१२॥
सोरह संख के आगे समरथ, जिन जग मोहिं पठाया ।
कहै कबीर आदि की बानी, बेद भेद नहिं पाया ॥१३॥

॥ महिमा आदि धाम ॥

॥ शब्द १ ॥

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहँ पूरन पुरुष हमारा ॥टेक॥
जहँ नहिं सुख दुख साच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा ।
नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना जोति उँजियारा ॥१॥
नहिं तहँ ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, बेद कितेब न बानी ।
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब उहाँ हिरानी ॥२॥
घर नहिं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रह्मंड कछु नाहीं ।
पाँच तत्त्व गुन तीन नहीं तहँ, साखी सब्द न ताहीं ॥३॥
मूल न फूल बेलि नहिं बीजा, बिना वृच्छ फल सोहै ।
ओअं सोहं अर्ध उर्ध नहिं, स्वासा लेख न कोहै ॥४॥
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूच्छम अस्थूलं ।
नहिं अच्छर नहिं अविगत भाई, ये सब जग के भूलं ॥५॥
जहाँ पुरुष तहवाँ कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना ।
हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरबाना ॥६॥

॥ शब्द २ ॥

अवधू कौन देश निरबाना ॥ टेक ॥
आदी जोति तबै कछु नाहीं, नहिं रहे बीज अँकूरा ।
बेद कितेब तबै कछु नाहीं, नहीं पिंड ब्रह्मंडा ॥१॥
पाँच तत्त गुन तीनों नाहीं, नहीं जीव अंकूरा ।
जोगी जती तपी सन्यासी, नहीं रहे सत सूरा ॥२॥
ब्रह्मा बिष्नु महेसुर नाहीं, नहिं रहे चौदह लोका ।
लोक दीप की रचना नाहीं, तब कै कहो ठिकाना ॥३॥
गुप्त कली जब पुरुष उचारा, परगट भया पसारा ।
कहै कबीर सुनो हो अवधू, अधर नाम परवाना ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

अवधू छोड़ो मन बिस्तारा ।
सो पद गहो जाहि से सद गति, पारब्रह्म से न्यारा ॥१॥
नहीं महादेव नहीं मुहम्मद, हरि हजरत तब नाहीं ।
आतम ब्रह्म नहीं तब होते, नहीं धूप नहिं छाहीं ॥२॥
अस्सी-सहस मुनी तब नाहीं, सहस अठासी मुलना ।
चाँद सुरज तारागन नाहीं, मच्छ कच्छ औतारा ॥३॥
बेद कितेब सिम्रित तब नाहीं, जीव न पारख आये ।
आदि अंत मध मन ना होते, पिरथी पवन न पानी ॥४॥
बाँग निवाज कलमा ना होते, नहीं रसूल खुदाई ।
गूँगा ज्ञान बिज्ञान प्रकासै, अनहद डंक बजाई ॥५॥
कहै कबीर सुनो हो अवधू, आगे करो बिचारा ।
पूरन ब्रह्म कहाँ ते प्रगटे, किरतिम किन उपचारा॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरति से देखिले वहि देस ॥ टेक ॥
देखत देखत दीसन लागे, मिटिगे सकल अँदेस ॥१॥
वहँ नहिं चन्द वहाँ नहिं सूरज, नाहिं पवन परवेस ॥२॥

वहँ नहिं जाप वहाँ नहिं अजपा, निःअच्छर परबेस ॥३॥
वहँ के गये बहुरि नहिं आये, नहिं कोउ कहा सँदेस ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गहु सतगुरु उपदेस ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

हंसन का इक देस है, तहँ जाय न कोई।
काग बरन छूटै नहीं, कस हंसा होई ॥१॥
हंस बसै सुख सागरे, झीलर[1] नहिं आवै।
मुक्ताहल को छाड़ि कै, कहुँ चुंच न लावै ॥२॥
मानसरोवर की कथा, बकुला का जानै।
उन के चित तलिया[2] बसै, कहो कैसे मानै ॥३॥
हंसा नाम धराइ कै, बकुला सँग भूले।
ज्ञान दृष्टि सूझै नहीं, वाही मति झूले ॥४॥
हंसा उड़ि हंसा मिले, बकुला रहि न्यारा।
कहै कबीर उठि ना सकै, जड़ जीव बिचारा ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

अबधू कौन देस निज डेरा ॥टेक॥
संसय काल सरीरे ब्यापै, काम क्रोध मद घेरा।
भूलि भटकि रचि पचि मरि जैहै, चलत हंस जम घेरा ॥१॥
भवसागर औगाह अगम है, वहाँ नाव ना बेड़ा।
छाड़ो कपट कुटिल चतुराई, केचुली पंथ न हेरा ॥२॥
चित्रगुप्त जब लेखा माँगै, कवन पुरुष बल हेरा।
मारै जीव दाव[3] फटकारे, अगिन कुंड लै डारा ॥३॥
मन बच कर्म गहो सतनामा, मान बचन गुरु केरा।
कहै कबीर सुनो हो अबधू, सब्द मैं हंस बसेरा ॥४॥

---

१ छिछले पानी में। २ तलैया। ३ तबर, कुल्हाड़ी।

॥ शब्द ७ ॥

हंसा चलो अगमपुर देसा ।
छाड़ो कपट कुटिल चतुराई, मानि लेहु उपदेसा ॥१॥
छाड़ो काम क्रोध औ माया, छाड़ो देस कलेसा ।
ममता मेटि चलो सुख सागर, काल गहै नहिं केसा ॥२॥
तीन देव पहुँचैं नाहीं तहँ, नहीं सारदा सेसा ।
कुरम बराह तहँ पार न पावैं, नहिं तहँ नारि नरेसा ॥३॥
गुरु गम गहो सब्द की करनी, छोड़ो मति बहुतेसा ।
हंसा सहज जाइ तहँ पहुँचे, गहि कबीर उपदेसा ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

हंसा अमरलोक निज देसा ॥ टेक ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर देवा, परे भर्म के भेसा ।
जुगन जुगन हम आइ चिताये, सार सब्द उपदेसा ॥१॥
सिव सनकादिक औ नारद हू, गै कर्म काल कलेसा ।
आदि अंत से हमैं न चीन्हे, धरत काल को भेसा ॥२॥
कोइ कोइ हंसा सब्द बिचारे, निरगुन करे निबेरा ।
सार सब्द हिरदे मैं झलके, सुख सागर की आसा ॥३॥
पान परवाना सब्द बिचारे, नरियर लेखा पाये ।
कहै कबीर सुख सागर पहुँचे, छूटे कर्म की फाँसा ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

हंसा जगमग जगमग होई ॥ टेक ॥
बिन बादर जहँ बिजुली चमकै, अमृत बर्षा होई ।
ऋषि मुनि देव करैं रखवारी, पिये न पावै कोई ॥१॥
राति दिवस जहँ अनहद बाजै, धुनि सुनि आनँद होई ।
जोति बरै साहिब के निसु दिन, तकि तकि रहत समोई ॥२॥

सार सब्द की धुनी उठत है, बूझै बिरला कोई ।
झरना झरै जूह[1] के नाके, (जेहिं) पियत अमरपद होई ॥३॥
साहिब कबीर प्रभु मिले बिदेही, चरनन भक्ति समोई ।
चेतनवाला चेत पियारे, नहिं तौ जात बहोई ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

हंसा गवन बड़ि दूर, साजन मिलना हो ॥ टेक ॥
ऊँची अटरिया पिया कै दुअरिया, गगन चढ़ै कोइ सूर ॥१॥
यहि बन बोलत कोइल कोकिला, वोहि बन बोलत मोर ॥२॥
अंतर बीच प्रेम कै बिरवा, चढ़ि देखब देस हजूर ॥३॥
कहै कबीर सुनु पिय की प्यारी, नाचु घुँघट करि दूर ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

चलो हंसा वा लोक मैं, जहँ प्रीतम प्यारा ॥ टेक ॥
अगम पंथ सूझै नहीं, नहिं दिस ना द्वारा ।
नाम क पेच घुमाइ कै, रहु जग से न्यारा ॥१॥
रैन दिवस उहवाँ नहीं, नहिं रबि ससि तारा ।
जहाँ भँवर गुंजार है, गति अगम अपारा ॥२॥
मात पिता सुत बंधु है, सब जग्त पसारा ।
इहाँ मिले उहाँ बीछुरे, हंसा होइ न्यारा ॥३॥
निरगुन रूप अनूप है, तन मन धन वारा ।
कहै कबीर गुरु ज्ञान मैं, रहु सुरित सम्हारा ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

कहौं उस देस की बतियाँ, जहाँ नहिं होत दिन रतियाँ ॥१॥
नहीं रबि चन्द्र औ तारा, नहीं उँजियार अँधियारा ॥२॥
नहीं तहँ पवन औ पानी, गये वहि देस जिन जानी ॥३॥
नहीं तहँ धरनि आकासा, करै कोइ संत तहँ बासा ॥४॥
उहाँ गम काल की नाहीं, तहाँ नहिं धूप औ छाहीं ॥५॥

---

१ नदी, नहर ।

न जोगी जोग से ध्यावै, न तपसी देह जरवावै ॥६॥
सहज में ध्यान से पावै, सुरति का खेल जेहि आवै॥७॥
सोहंगम नाद नहिं भाई, न बाजै संख सहनाई ॥८॥
निहच्छर जाप तहँ जापै, उठत धुन सुन्न से आपै॥९॥
मँदिर में दीप बहु बारी, नयन बिनु भई अँधियारी॥१०॥
कबीरा देस है न्यारा, लखै कोइ नाम का प्यारा ॥११॥

॥ महिमा नाम ॥

॥ शब्द १ ॥

सुरतिया नाम से अटकी ॥ टेक ॥
करम भरम औ बेद बड़ाई, या फल से सटकी ।
नाम के चूके पार न पैहो, जैसे कला नट की ॥१॥
जागत सोवत सोवत जागत, मोहिं परै चट[1] सी ।
जैसे पपिहा स्वाँति बुन्द को, लागि रहै रट सी ॥२॥
भरम मेटुकिया सिर के ऊपर, सो मेटुकी पटकी ।
हम तो अपनी चाल चलत हैं, लोग कहै उलटी ॥३॥
प्रीत पुरानी नई लगन है, या दिल में खटकी ।
और नजर कछु आवत नाहीं, नहिं मानै हटकी ॥४॥
प्रेम की डोरी में मन लागा, ज्ञान डोर झटकी ।
जैसे सलिता सिंधु समानी, फेर नहीं पलटी ॥५॥
गहु निज नाम खोज हिरदे में, चीन्हि परै घट की ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, फेर नहीं भटकी ॥६॥

---

[1] चाट, खटक ।

॥ शब्द २ ॥

अजर अमर इक नाम है सुमिरन जो आवै ॥ टेक॥
बिन मुखड़ा से जप करो, नहिँ जीभ डुलावो ।
उलटि सुरति ऊपर करो, नैनन दरसाओ ॥१॥
जाहु हंस पच्छिम दिसा, खिरकी खुलवावो ।
तिरबेनी के घाट पर, हंसा नहवावो ॥२॥
पानी पवन कि गम नहीं, वोहि लोक मँझारा ।
ताही बिच इक रूप है, वोहि ध्यान लगावो ॥३॥
जिमीं असमान उहाँ नहीं, वो अजर कहावै ।
कहै कबीर सोइ साधु जन, वा लोक मँझावै । ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

हंसा निसु दिन नाम अधारा ॥टेक॥
सार सब्द हिरदे गहि राखो, सब्द सुरति करु मेला ।
नाम अमी रस निसु दिन चाखो, बैठो अधर अधारा॥१॥
यह संसार सकल जम फंदा, अरुझि रहा जग सारा ।
निरमल जोति निरंतर झलकै, कोऊ न कीन्ह बिचारा॥२॥
माया मोह लोभ में भूले, करम भरम ब्योहारा ।
निस दिन साहिब संग बसतु है, सार सब्द टकसारा ॥३॥
आदि अंत कोइ जानत नाहीं, भूलि परा संसारा ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बैठो पुरुष दुआरा ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

हंसा करौ नाम नौकरी ॥टेक ॥
नाम बिदेही निसु दिन सुमिरै, नहि भूलै छिन घरी ॥१॥
नाम बिदेही जो जन पावै, कभुँ न सुरति बिसरी ॥२॥
ऐसो सब्द सतगुरु से पावै, आवा गवन हरी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, पावै अमर नगरी ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

ब्योपारी निज नाम का हाटे चलु भाई ॥टेक॥
साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई।
अग्र बस्तु इक मूल है, सौदागर लाई ॥१॥
सील सँतोष पलरा भये, सूरति करि डाँड़ी।
ज्ञान बटखरा चढ़ाइ कै, पूरा करु भाई ॥२॥
करि सौदा घर को चले, रोके दरबानी।
लेखा माँगे बस्तु का, कहँ के ब्योपारी ॥३॥
अच्छर पुरुष इक मूल है, गुरु दीन्ह लखाई।
इतना सुनि लज्जित भये, सिर दीन्ह नवाई ॥४॥
हाट गली पचरंग की, भव करत दलाली।
जो होवै वहि पार को, तिन्ह देत उतारी ॥५॥
अमर लोक दाखिल भये, तजि कै संसारा।
खबर भई दरबार, पुरुष पै नजर गुजारा ॥६॥
कहै कबीर बैठे रहो, सिख लेहु हमारी।
काल कष्ट ब्यापै नहीं, यही नफा तुम्हारी ॥७॥

॥ शब्द ६ ॥

धुनि सुनि के मनुवाँ मगन हुआ ॥टेक॥
लाइ समाज रहो गुरु चरना, अंत काल दुख दूरि हुआ ॥१॥
सुन्न सिखर पर झालर झलकै, बरसै अमी रस बुंद चुआ ॥२॥
सुरति निरति की डोरी लागी, तेहिं चढ़ हंसा पार हुआ ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अगम पंथ पर पाँव दिया ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

जो कोइ सत्तनाम धुनि धरता ॥टेक॥
तन कर गुन[1] औ मन कर सूजा, सब्द परोहन[2] भरता ॥१॥
करु ब्योपार सहज है सौदा, टूटा कबहूँ न परता ॥२॥

---

१ सुतली। २ बरधी लादने की ; माल।

बेद कितेब से नाम सरस है, सोई नाम लै तरता ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, फँटा कोइ न पकरता ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

सुमिरन बिन अवसर जात चली ॥टेक॥
बिन माली जस बाग सूखि गै, सींचे बिन कुम्हिलात कली १
छमा सँतोष जबै तन आवै, सकल ब्याध तब जात टली २
पाँचो तत्त बिचारि के देखो, दिल की दुरमति दूर करी ३
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सकल कामना छोड़ि चली ॥४॥

॥ महिमा शब्द ॥

॥ शब्द १ ॥

हंसा सब्द परख जो आवै ।
करि अकास[1] चित तान पार को, मूल सब्द तब पावै ॥१॥
पाँच तत्त पच्चीस प्रकिरती, तीनौं गुनन मिलावै ।
अंक परवाना जबही पावै, तब वह संत कहावै ॥२॥
अंक परवाना सब्द अतीत है, जो निसु दिन गोहरावै ।
अंस बंस ह्वै मलयागिरि परसत, सत्त सबै बिधि पावै ॥३॥
एकै सब्द सकल जग पूरा, सुरति रहनि जब आवै ।
चाँद सुरज दुइ साखी देई, सुखमनि चँवर ढुरावै ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाइ हंसा, या पद को अरथावै ।
जगमग जोत झलाझल झलकै, निर्मल पद दरसावै ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

हँसा परखु सब्द टकसारा ॥ टेक ॥
बिन पारख कोइ पार न पावै, भूला जग संसारा ।
सब आये ब्योपार करन को, घर की जमा गँवाया ॥१॥

---

१ आकाश के अर्थ छिद्र के भी हैं—यहाँ अभिप्राय तीसरे तिल से है ।

राम रतन पहलाद पारखी, नित उठि पारख कीन्हा ।
इंद्रासन सुख आसन लीन्हा, सार सब्द नहिं चीन्हा ॥२॥
अब सुनि लेहु जवाहिर मोदी, खरा खोट नहिं बूझा ।
सिव गोरख अस जोगी नाहीं, उनहूँ को नहिं सूझा ॥३॥
बड़ बड़ साधू बाँधे छोरे, राम भाग दुइ कीन्हा ।
'रारा' अच्छर पारख लीन्हा, 'मा'हिं भरम तज दीन्हा ॥४॥
जो कोइ होय जौहरी जग मैं, सो या पद को बूझै ।
तीन लोक औ चार लोक लौं, सब घट अंतर सूझै ॥५॥
कहै कबीर हम सब को देखा, सबै लाभ को धावै ।
सतगुरु मिलै तो भेद बतावै, ठीक ठौर तब पावै ॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

इक दिन साहिब बेनु बजाई ।
सब गोपिन मिलि धोखा खाई, कहैं जसुदा के कन्हाई ॥१॥
कोइ जंगल कोइ देवल बतावै, कोई द्वारिका जाई ।
कोइ अकास पाताल बतावै, कोइ गोकुल ठहराई ॥२॥
जल निर्मल परबाह थकित भे, पवन रहे ठहराई ।
सोरह बसुधा इकइस पुर लौं, सब मुर्छित होइ जाई ॥३॥
सात समुद्र जबै घहराने, तैंतिस कोटि अघाने ।
तीन लोक तीनौं पुर थाके, इन्द्र उठो अकुलाने ॥४॥
दस औतार कृष्न लौं थाका, कुरम बहुत सुख पाई ।
समुझि न परी वार पार लौं, या धुनि कहँ तें आई ॥५॥
सेसनाग औ राजा बासुक, बराह मुर्छित होइ आई ।
देव निरंजन आद्या माया, इन दुनहुन सिर नाई ॥६॥
कहैं कबीर सतलोक के पूरुष, सब्द केर सरनाई ।
अमी अंक ते कुहुक निकारी, सकल सृष्टि पर छाई ॥७॥

॥ साध महिमा ॥

॥ शब्द १ ॥

साधु घर सील सँतोष बिराजै ।
दया सरूप सकल जीवन पर, सब्द सरोतरि गावै ॥१॥
जहाँ जहाँ मन पौरत धावै, ताके संग न जावै ।
आसन अदल अरु छमा अग्र धुज, तन तजि अंत न धावै ॥२॥
ततबादी सतगुरु पहिचाना, आतम दीप प्रगासा ।
साधू मिलै सदा सीतल गति, निसु दिन सब्द बिलासा ॥३॥
कह कबीर प्रीति सतगुरु से, सदा निरंतर लागी ।
सतगुरु चरन हृदय मैं धारे, सुख सागर मैं बासी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

धन्य भाग जाके साध पाहुना आये ॥टेक॥
भयो लाभ चरन अमृत लै, महा प्रसाद कि आसा ।
जौन मता हम जुग जुग ढूँढ़ो, सो साधन के पासा ॥१॥
जौन प्रसाद देवन को दुर्लभ, साध से नित उठि पाये ।
दगाबाज दुरमति के कारन, जनम जनम डहकाये[1] ॥२॥
कथा ग्रंथ होय द्वारे पर, भाव भक्ति समझावैं ।
काम क्रोध मद लोभ निवारे, हिलि मिलि मंगल गावैं ॥३॥
सील सँतोष बिबेक छमा धरि, मोह के सहर लुटावैं ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अमर लोक पहुँचावैं ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

बसै अस साध के मन नाम ॥टेक॥
जैसे हेत गाय बछवा से, चाटत सूखा चाम ॥१॥
कामी के हिये काम बसो है, सूम की गाँठी दाम ॥२॥
जस पुरइन जल बिन कुम्हिलावै, वैसे भगत बिन नाम ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, पद पाये निरबान ॥४॥

---

१ ठगाये

॥ शब्द ४ ॥

है साधू संसार में कँवला जल माहीं ।
सदा सर्बदा सँग रहै, जल परसत नाहीं ॥१॥
जल केरी ज्यौं कूकुही, जल माहिं रहानी ।
पंख पानि बेधै नहीं, कछु असर न जानी ॥२॥
मीन तिरै जल ऊपरे, जल लगै न भारा ।
आड़ अटक मानै नहीं, पौढ़ै जल धारा ॥३॥
जैसे सीप समुद्र में, चित देत अकसा ।
कुँभकला[1] ह्वै खेलही, तस साहिब दासा ॥४॥
जुगति जमूरा[2] पाइ कै, सरपे लपटाना ।
बिष वा के बेधे नहीं, गुरु गम्म समाना ॥५॥
दूध भात घृत भोजन रु, बहु पाक मिठाई ।
जिभ्या लेस लगै नहीं, उन कै रुसनाई ॥६॥
बामी में बिषधर बसै, कोइ पकरि न पावै ।
कहै कबीर गुरु मंत्र से, सहजै चलि आवै ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

नगर में साधू अदल चलाई ॥टेक॥
सार सब्द को पटा लिखावो, जम से लेहु लड़ाई ।
पाँच पचीस करो बस आपन, सहजे नाम समाई ॥१॥
सुरति सब्द एक सम राखो, मन का अदल उठाई ।
काम क्रोध की पूँजी तौलो, सहज काल टरि जाई ॥२॥
सूरति उलटि पवन के सोधो, त्रिकुटी मधि ठहराई ।
सोहं सोहं बाजा बाजे, अजब पुरी दरसाई ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सतगुरु बस्तु लखाई ।
अरध उरध बिच तारी लावो, तब वा लोके जाई ॥४॥

---

१ घड़ों का खेल जिन्हें सिर पर रख कर नट बाँस पर चढ़ते हैं।
२ ज़हरमोहरा जिससे साँप का ज़हर असर नहीं करता ।

॥ शब्द ६ ॥

है कोइ अदली अदल चलावै ।
नगर मैं चोर मूसन नहिं पावै ॥१॥
संतन के घर पहरा जागै ।
फिरि वो काल कहाँ होइ लागै ॥२॥
पाँचो चोर छठे मन राजा ।
चित के चौतरा न्याव चुकावै ॥३॥
लालच नदिया निकट बहतु है ।
लोभ मोह सब दूरि बहावै ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो ।
गगन मैं अनहद डंक बजावै ॥५॥

॥ बिरह और प्रेम ॥

॥ शब्द १ ॥

कौन मिलावै मोहिं जोगिया हो, जोगिया बिनु रह्यो न जाय ॥ टेक ॥
हौं[1] हिरनी पिया पारधी[2] हो, मारे सब्द के बान ।
जाहि लगी सो जानही हो, और दरद नहिं जानि हो ॥१॥
मैं प्यासी हौं पीव की हो, रटत सदा पिव पीव ।
पिया मिलै तो जीव है, (नातो) सहजै तयागौं जीव हो ॥२॥
पिय कारन पियरी भई हो, लोग कहै तन रोग ।
छः छः लंघन मैं करौं रे, पिया मिलन के जोग हो ॥३॥
कहै कबीर सुनु जोगिनी हो, तन मैं मनहिं मिलाय ।
तुम्हरी प्रीति के कारन जोगी, बहुरि मिलैंगे आय हो ॥४॥

---

१ मैं । २ शिकारी ।

॥ शब्द २ ॥

जो कोइ येहि बिधि प्रीति लगावै ॥ टेक ॥

गुरु का नाम ध्यान ना छूटै, परगट ना गोहरावै ॥१॥
कुरम[1] सुतन[2] को धरतु है ऊँचे, आप उदद्र को धावै।
निसु दिन सुरत रहै अंडन पर, पल भर ना बिसरावै ॥२॥
जैसे चात्रिक रटै स्वाँति को, सलिता निकट ना आवै।
दीनदयाल लगन हितकारी, स्वाँती जल पहुँचावै ॥३॥
फूटि सुगंध कंज[3] की जैसे, मधुकर[4] के मन भावै।
है गइ साँझि बंधि गे संपुट, ऐसी भक्ति कहावै ॥४॥
जैसे चकोर ससी तन निरखे, तन की सुधि बिसरावै।
ससि तन रहत एक टक लागो, तब सीतल रस पावै ॥५॥
ऐसी जुगत करै जो कोई, तब सो भगत कहावै।
कहै कबीर सतगुरु की मूरति, तेहि प्रभु दरस दिखावै ॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

साहिब हमरे सनेसी आये ॥ टेक ॥

आये सनेसी मोरे आदि घरा से, सोवत मोहिं जगाये ॥१॥
पाती बाँचि जुड़ानी छाती, नैनन में जल धाये ॥२॥
धन्न भाग मोर सुनो हो सखी री, अजर अमर बर पाये ॥३॥
साहिब कबीर मोहिं मिलिगे सतगुरु, बिगरल मोर बनाये ॥४

॥ शब्द ४ ॥

अमी रस भँवरा चाखि लिया ॥ टेक ॥

जाके घट में प्रेम प्रगासा, सो बिरहिन काहे बारै दिया ॥१॥
अंते न जाय अपन घट खोजै, सो बिरहिन निज पावै पियार
पाव पलक में तसकर मारूँ, गुरु अपने को साखि दिया ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जियतै यह तन जीति लिया ॥४

---

१ कछुआ। २ बच्चे या अंडे। ३ कमल। ४ भँवरा।

॥ शब्द ५ ॥

बिरहिनि तो बेहाल है, को जानत हाला ॥ टेक ॥
सजन सनेही नाम का, हर दम का प्याला ।
पीवैगा कोइ जौहरी, सतगुरु मतवाला ॥१॥
पीवत प्याला प्रेम का, हम भइ हैं दिवानी ।
कहा कहूँ पिय रूप की, कछु अकथ कहानी ॥२॥
नाचन निकसी हे सखी, का घूँघुट काढ़ो ।
नाच न जाने बावरी, कहे आँगन टेढ़ो ॥३॥
निःअच्छर के ध्यान में, मेटै अँधियाला ।
कहै कबीर कोइ संतजन, बिच लावत ख्याला ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

पिय को सोई सुहागिन भावै ।
चित चंदन को निसु दिन रगरै, चुनि चुनि अंग चढ़ावै ॥१॥
अति सुगंध बोलै मुख बानी, यहि बिधि खसम मनावै ।
दाबत चरन दगा नहिं दिल में, काग कुबुधि बिसरावै ॥२॥
बीते दिवस रैन जब आई, कर जोरि सेवा लावै ।
इक इक कलियाँ चुनै महल में, सुंदर सेज बिछावै ॥३॥
सुरति चँवर लै सनमुख झारै, तबै पलँग पौढ़ावै ।
मगन रहै नित गगन झरोखे, झलकत बदन छिपावै ॥४॥
मिलि दुलहा जब दुलहिनि सोहै, दिल में दिलहिं मिलावै ।
कहै कबीर भाग वहि धन के, पतिब्रता बनि आवै ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

अलमस्त दिवानी, लाल भरी रँग जोबनियाँ ।
रस मगन भरी है, देखि लालन की सेजरियाँ ॥१॥
कर पंखा डुलावै, संग सोहंग सहेलरियाँ ।
जहँ चंद न सूरा, रैन नहीं वहँ भोरनियाँ ॥२॥

जहँ पवन न पानी, बिनु बादल घनघोरनियाँ ।
जहँ बिजुली चमकै, प्रेम अमी की लगीं झरियाँ ॥३॥
वहँ काया न माया, कर्म नहीं कछु रेखनियाँ ।
जहँ साहिब कबीर हैं, बिगसित पुहुप प्रकासनियाँ ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

दरस दिवाना बावरा, अलमस्त फकीरा ।
एक अकेला ह्वै रहा, अस मत का धीरा ॥ १ ॥
हिरदे में महबूब है, हर दम का प्याला ।
पीयेगा कोइ जौहरी, गुरुमुख मतवाला ॥२॥
पियत पियाला प्रेम का, सुधरे सब साथी ।
आठ पहर झूमत रहै, जस मैगल[1] हाथी ॥३॥
बंधन काटे मोह के, बैठा निरसंका ।
वा के नजर न आवता, क्या राजा रंका ॥४॥
धरती तो आसन किया, तंबू असमाना ।
चोला पहिरा खाक का, रहा पाक समाना ॥५॥
सेवक को सतगुरु मिले, कछु रहि न तबाही[2] ।
कहै कबीर निज घर चलो, जहँ काल न जाई ॥६॥

॥ शब्द ९ ॥

जेहि कुल भगत भाग बड़ होई ॥ टेक ॥
गनिये न बरन अबरन रंक धनी, बिमल बास निज सोई॥१॥
बाम्हन छत्री बैस सुद्र सब, भगत समान न कोई ॥२॥
धन वह गाँव ठाँव अस्थाना, ह्वै पुनीत संग सब लोई॥३॥
होत पुनीत जपे सतनामा, आपु तरै तारै कुल दोई ॥४॥
जैसे पुरइनि रहै जल भीतर, कहै कबीर जग में जन सोई॥५

१ मस्त । २ दुख, क्लेश ।

॥ सूरमा ॥

॥ शब्द १ ॥

लागा मोरे बान कठिन करका ॥ टेक ॥
ज्ञान बान धरि सतगुरु मारा, हिरदे माहिँ समाना ।
बीच करेजा पीर होत है, धीरज ना धरना ॥१॥
करिया[1] काटे जिये रे भाई, गुरु काटे मरि जाई ।
जिनके लागे सब्द के डंडा, त्यागि चले पाच्छाई[2] ॥२॥
यह दुनिया सब भई दिवानी, रोवत है धन काँ ।
दौलत दुनिया छोड़ि दिया है, भागि चलो बन काँ ॥३॥
चारि दिनाँ की है जिंदगानी, मरना है सब का ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गाफिल है कब का ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

बाजत कींगरी निरबान ॥ टेक ॥
सुनि सुनि चित भइ बावरी, रीझे मन सुल्तान ।
सील सँतोष कै बखतर पहिरी, सत दृष्टी परवान ॥१॥
ज्ञान सरोही[3] कमर बाँधि लै, सूरा रनहिँ समान ।
प्रेम मगन ह्वै घायल खेलै, कायर रन बिचलान ॥२॥
सूरा के मैदान मेँ, का कायर को काम ।
सूरा को सूरा मिलै, तब पूरा संग्राम ॥३॥
जीवत मिरतक ह्वै रहु जोधा, करो बिमल असनान ।
उनमुनि दृष्टि गगन चढ़ि जाओ, लागै त्रिकुटी ध्यान ॥४॥
रोम रोम जाको पद परगासा, ता को निरमल ज्ञान ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, करो इस्थिर मन ध्यान ॥५॥

---

१ साँप । २ बादशाही । ३ एक तरह की तलवार ।

॥ शब्द ३ ॥

भाई ऐन लड़ै सोइ सूरा ॥ टेक ॥

मन मारि अगमपुर लेहू, चित्रगुप्त परे डेरा करहू ॥१॥
जहँ नाहिं जनम अरु मरना, जम आगे न लेखा भरना ॥२॥
जमदूत है तेरा बैरी, का सोवै नींद घनेरी॥३॥
जहँ बाँधि सकल हथियारा, गुरु ज्ञान को खड़ग सम्हारा॥४॥
गढ़ बस किये पाँचो थाना, जहँ साहिब है मिहरबाना ॥५॥
जहँ बाजै जुझावर[1] बाजा, सब कायर उठि उठि भाजा॥६॥
कोइ सूर अड़े मैदाना, तहँ काटि किये खरिहाना॥७॥
जहँ तीर तुपक नहिं छूटे, तहँ सब्दन सोँ गढ़ टूटे॥८॥
जहँ बाजै कबीर को डंका, तहँ लूटि लिये जम बंका॥९॥

॥ बिनती ॥

॥ शब्द १ ॥

कब लखि हैाँ बंदी-छोर ॥ टेक ॥

जरा मरन मेटो जिय केरी, जियत मरत दुख जोर ॥१॥
हे साहिब मोहिं अरज न आवै, पुरवो ललसा मोर ॥२॥
हे साहिब मैं बारी भोरी, आखिर आमिन तोर ॥३॥
हे साहिब मोर भरम मिटावो, राखो चरन कि ओर ॥४॥
कहै कबीर सुनो मोर आमिनि, ले चलुँ फंदा तोड़ ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

अबकी बार उबारिये, मेरी अरजी दीनदयाल हो ॥ टेक॥

आई थी वा देस से हो, भई परदेसिन नारि ।
वा मारग मोहिं भूलि गो, (जासे) बिसरि गयो
निज नाम हो ॥१॥

---

१ लड़ाई का। २ धनी धर्मदास की स्त्री का नाम शरणागत जीव।

जुगन जुगन भरमत फिरी हो, जम के हाथ बिकाय ।
कर जोरे बिनती करौं हो, मिलि बिछुरन
नहिं होय हो ॥२॥
बिषम नदी बिकरार है हो, मन हठ करिया धार ।
मोह मगर वा के घाट मैं, (जिन) खायो
सुर नर झारि हो ॥३॥
सब्द जहाज कबीर के हो, सतगुरु खेवनहार ।
कोइ कोइ हंसा उतरिहैं हो, पल मैं देउँ छोड़ाइ हो ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

साहिब मैं ना भूलैाँ दिन राती ॥ टेक ॥
जैसे सीपि रहै जल भीतर, चाहत नीर सुवाँती ।
बारह मास अमी रस बरसै, ता से नाहिं अघाती ॥१॥
जैसे नारि चहै पिय आपन, रहै बिरह रस माती ।
अंतर वा के उठै मलोला, बिरह दहै तन छाती ॥२॥
गम्म अगम कोउ जानत नाहीं, रोकै काल अचानक घाटी ।
या ते नाम से लगन लगाओ, भक्ति करो दिन राती ॥३॥
साहिब कबीर अगम के बासी, नाहिं जाति नहिं पाँती ।
निसु दिन सतगुरु चरन भरोसे, साध के संग सँगाती ॥४॥

॥ दीनता ॥

॥ शब्द १ ॥

गरीबी है सब मैं सरदार ॥ टेक ॥
उलटि कै देखो अदल गरीबी, जा की पैनी धार ॥१॥
सतजुग त्रेता द्वापर कलिजुग, परलय तारनहार ॥२॥
दुखभंजन सुखदायक लायक, बिपति बिडारनहार ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, हंस उबारनहार ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

साहिब को मेहीं[1] होय सो पावै ॥ टेक ॥

मोटो माटी परै कोँहरा[2] घर, उठि चार लात लगावै ।
वो माटी को मेहीं करि सानै, तबै चाक बैसावै[3] ॥१॥
मोटा सूत परे कोरिया घर, मेहीं मेहीं गोहरावै ।
वोही सूत को ताना तानै, मेहीं कहाँ से आवै ॥२॥
बिखरी खाँड़ परै रेती मैं, कुंजर मुख ना आवै ।
मान बड़ाई छोड़ बावरे, चिँउटी होइ चुनि खावै ॥३॥
बड़े भये तो सब जग जानै, सब पर अदल चलावै ।
कहै कबीर बड़ बाँधा जैहै, वा को कौन छुड़ावै ॥४॥

॥ भेद बानी ॥

॥ शब्द १ ॥

पियत मरहमी यार, अमीरस बुंद झरै ॥ टेक ॥

बिन सागर के अमृत भरिया, बिना सीप के मोती ।
संत जवाहिर पारख कीन्हा, अग्र लै बस्तु धरी ॥१॥
डोरी डगर गगर सिर ऊपर, गेंडुर मद्धु धरी ।
चेतन चलै सुरति नहिँ चूकै, उलटा नीर चढ़ी ॥२॥
टोह लिया सतसंग पाइ कै, बिन गुरु कौन कही ।
सोना थीर कसौटी नाहीं, कैसे कै समुझि परी ॥३॥
भेदी होय सो भरि भरि पीवै, अनभेदी भरम फिरी ।
कहै कबीर मिलैं जो सतगुरु, जीवन मुक्त करी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

जो कोइ निरगुन दरसन पावै ॥ टेक ॥

प्रथमे सुरति जमावै तिल पर, मूल मंत्र गहि लावै ।
गगन गराजै दामिनि दमकै, अनहद नाद बजावै ॥१॥

---

१ महीन = बारीक अर्थात दीन । २ कुम्हार । ३ बैठावै ।

बिन जिभ्या नामहिं को सुमिरै, अमि रस अजर चुवावै ।
अजपा लागि रहै सूरति पर, नैन न पलक डुलावै ॥२॥
गगन मँदिल मैं फूल फुलाना, उहाँ भँवर रस पावै ।
इँगला पिँगला सुखमनि सोधै, प्रेम जोति लौ लावै ॥३॥
सुन्न महल मैं पुरुष बिराजै, जहाँ अमर घर छावै ।
कहै कबीर सतगुरु बिन चीन्हे, कैसे वह घर पावै ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

पिया कै खोजि करै सो पावै ॥ टेक ॥
ई करता बसिया घट भीतर, कहत न कछु बनि आवै ।
स्वाँसा सार सुरति मैं राखै, त्रिकुटी ध्यान लगावै ॥१॥
नाभि कमल अस्थान जीव का, स्वाँसा लगि लगि जावै ।
ठहरत नाहिं पलक निस बासर, हाथ कवन बिधि आवै ॥२॥
बंक नाल होइ पवन चढ़ावै, गगन गुफा ठहरावै ।
अजपा जाप जपै बिनु रसना, काल निकट नहिं आवै ॥३॥
ऐसी रहनि रहै निसु बासर, करम भरम बिसरावै ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बहुरि न भवजल आवै ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

बिन गुरु ज्ञान नाम ना पैहौ, मिरथा जनम गँवाई हो ॥ टेक
जल भरि कुंभ धरे जल भीतर, बाहर भीतर पानी हो ।
उलटि कुंभ जल जलहि समैहै, तब का करिहौ ज्ञानी हो ॥१॥
बिनु करताल पखावज बाजै, बिनु रसना गुन गाया हो ।
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु अलख लखाया हो ॥२॥
है अथाह थाह सबहिन मैं, दरिया लहर समानी हो ।
जाल डारि का करिहौ धीमर, मीन के ह्वै गै पानी हो ॥३॥
पंछी क खोज औ मीन कै मारग, ढूँढ़ै ना कोइ पाया हो ।
कहै कबीर सतगुरु मिल पूरा, भूले को राह बताया हो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

उतर दिसा पँथ अगम अगोचर, अधर अंग इक देस हो ।
चल हो सजन वो देस अमर है, जहँ हंसन को बास हो ॥१॥
आवै जाय मरै ना कबहूँ, रहै पुरुष के पास हो ।
आलस मोह एको नहिं ब्यापै, सुपने सूरति जास हो॥२॥
पीवो हंस अमृत सुख धारा, बिन सुरही[1] के दूध हो ।
संसय सोग कछू नहिं मन मैं, बिन मुक्ता गुन सूझ हो ॥३॥
सेत सिंहासन सेत बिछौना, जहँ बसै पुरुष हमार हो ।
अच्छर मूल सदा मुख भाखौ, चित दै गहहु सुहाग हो ॥४॥
सेत तँबूल समरथ मुख छाजै, बैठे लोक मँझार हो ।
हंसन के सिर मटुक बिराजै, मानिक तिलक लिलार हो ॥५॥
आमिनि ह्वै उतरे भवसागर, जिन तारे कुल बंस हो ।
सत गुरु भाव कछनी तन कपरा, मिलि लेहु पुरुष कबीर हो॥६॥

॥ शब्द ६ ॥

अबधू हंस देस है न्यारा ॥ टेक ॥
तीरथ ब्रत औ जोग जाप तप, सुरति निरति सेन्यारा ।
तीन लोक से बाहर डोलै, करम भरम पचि हारा ॥१॥
कोटि कोटि मुनि ब्रम्हा होइगे, कोई न पाये पारा ।
मंतर जाप उहाँ ना पहुँचै, सुरति करो दरबारा ॥२॥
सुख सागर मैं बासा कीजै, मुकता करो अहारा ।
बंकनाल चढ़ि गरजन गरजै, सतगुरु अधर अधारा ॥३॥
कहै कबीर सुनो हो अबधू, आप करो निरवारा ।
हंसा हमरे मिले हंसन में, पुनि न लखे भवजारा ॥४॥

---

[1] गाय ।

॥ शब्द ७ ॥

सतगुरु सब्द गही मोरे हंसा, का जड़ जन्म गँवावसु हो ॥टेक॥

त्रिकुटी धार बहै इक संगम, बिना मेघ झरि लावसु हो।
लौका लौकै बिजुली तड़पै, अजब रूप दरसावसु हो ॥१॥

करहु प्रीति अभि अंतर उर में, कवने सुर लै गावसु हो।
गगन मँदिल में जोति बरतु है, तहाँ सुरत ठहरावसु हो ॥२॥

इँगला पिँगला सुखमनि सोधो, गगन पार ठहरावसु हो।
मकर तार के द्वारे निरखो, ऊपर गढ़ी उठावसु हो ॥३॥

बंकनाल षट खिरकि[1] उलटिगै, मूल चक्र पहिरावसु हो।
द्वादस कोस बसै मोर साहिब, सूना सहर बसावसु हो ॥४॥

दूनोँ सरहद अनहद बाजै, आगे सोहँग दरसावसु हो।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अमर लोक पहुँचावसु हो ॥५॥

॥ शब्द ८ ॥

हंसा कोइ सतगुरु गम पावै ॥ टेक ॥

उजल बास निस बासर देखै, सीस पदम झलकावै।
राव रंक सब सम करि जानै, प्रगट संत गुन गावै ॥१॥

अति सुख सागर नर्क स्वर्ग नाहिँ, दुरमति दूर बहावै।
जहँ देखूँ तहँ परसत चंदा, फनि मनि जोति बरावै ॥२॥

रमै जगत मेँ ज्योँ जल पुरइनि, यहि बिधि लेप न लावै।
जल के पार कँवल बिगसाना, मधुकर के मन भावै ॥३॥

बरन बिबेक भेद सब जाना, अबरन बरन मिलावै।
अटक भटक आड़ नहिँ कबही, घट फूटे मिलि जावै ॥४॥

जब का मिलना अब मिलि रहिये, बिछुरत छुरी लखावै।
कहै कबीर काया का मुरचा, सिकलो किये बनि आवै ॥५॥

---

१ खिड़की, द्वार।

॥ शब्द ९ ॥

अविगति पार न पावै कोई ॥ टेक ॥
अविगति नाम पुरुष को कहिये, अगम अगोचर बासा ।
ता को भेद संत कोइ जानै, जा की सुरति समोई ॥१॥
अविगति अच्छर जग से न्यारा, जिभ्या कहा न जाई ।
बेद कितेब पार नहिं पावै, भूलि रहे नर लोई ॥२॥
अविगति पुरुष चराचर ब्यापै, भेद न पावै कोई ।
चार बेद मैं ब्रह्मा भूले, आदि नाम नहिं पाई ॥३॥
अविगति नाम की अद्भुत महिमा, सुरति निरति से पाई ।
दास कबीर अमरपुर बासी, हंसा लोक पठाई ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

हंसा अमर लोक पहुँचावो ॥ टेक ॥
मन कै मरम धरो गुरु आगे, ज्ञान घोड़ चढ़ि आवो ।
सहज पलान चित्त कै चाबुक, अलख लगाम लगावो ॥१॥
नरखि परखि के तरकस बाँधो, सुरति कमान चढ़ावो ।
रबि को रथ सहजे मैं मिलिहै, वोही को सान बुझावो ॥२॥
कुमति काटि अलगे करि डारो, सुमति के नीर बुझावो ।
सार सब्द की बाँधि कटारी, वोहि से मारि हटावो ॥३॥
धिरज छमा का संग लिये दल, मोह के महल लुटावो ।
ताही समय मवासी राजा, वाहि को पकरि मँगावो ॥४॥
दिल को भेदी सहजहि मिलिहै, अनहद संख बजावो ।
कहै कबीर तोरे सिर पर साहिब, ताही से लव लावो ॥५॥

॥ शब्द ११॥

निरभय होइ कै जागु रे मन मोर ॥ टेक ॥
दिन के जागो राति के जागो, मूसै ना घर चोर ॥१॥
बावन कोठरी दस दरवाजा, सब मैं लागैं चोर ॥२॥

आगे जेठ जिठनियाँ पाछे, सँग मैं देवर तोर ॥३॥
कहैं कबीर चलु गुरु के मत मैं, का करिहै जम जोर ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

देखब साईं कै बजार, सखी सँग हमहुँ चलब अब ॥टेक॥
सासु के आये पाहुना, ननदी के चालनहार।
खिरकी के पैंड़ा लै चले हैं, खुलि गये कपट किवार ॥१॥
चारजतन का बना खटोलना, आलेआले बाँस लगाय।
पाँच जना मिलि लै चले हैं, ऊपर से लालि उढ़ाय ॥२॥
भवसागर इक नदी बहतु है, रोवै कुल परिवार।
एक न रोवै उनकी तिरिया, जिन्ह के सिखावनहार ॥३॥
भवसागर के घाट पर, इक साध रहे बिकरार।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिररे उतरिगे पार ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

रासा परचे रास है, जानै कोइ जागृत सूरा।
सतगुरु की दाया भई, लखो जगमग नूरा ॥१॥
दो परबत के संधि मैं, लखो जगमग नूरा।
अद्भुत कथा अपार है, कैसे लागै तीरा ॥२॥
तन मन से परिचय करौ, सहजै ध्यान लगावो।
नाद बिंद दोइ बाँधिके, उलटा गगन चढ़ावो ॥३॥
अधर मध्य के सुन्न मैं, बोलै सब्द गँभीरा।
ज्योँ फूलन मैं बास है, त्योँ रमि रहे कबीरा ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

जुक्ति से परवान बाबा, जुक्ति से परवान बे ॥टेक॥
मूल बाँधो नाभि साधो, पियो हंसा पवन बे।
सुषमना घर करो आसन, मिटै आवागवन बे ॥१॥
तीन बाँधो पाँच साधो, आठ डारो काटि बे।
आव हंसा पियो पानी, त्रिबेनी के घाट बे ॥२॥

माय मार पिता को बाँधो, घर को देव जराय बे ।
ऐसा बाबा चतुर भेदी, गगन पहुँचै जाय बे ॥३॥
मार ममता टार तृस्ना, मैल डारो धोय बे ।
कहै कबीर सुनौ साधौ, आप करता होय बे ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

अवधू जानि राखु मनठौरा, काहे को बाहर दौरा ॥टेक॥
तो मैं गिरवर तो मैं तरवर, तो मैं रवि औ चन्दा ।
तारा मंडल तोहि घट भीतर, तो मैं सात समुन्दा ॥१॥
ममता मेटि पहिर मन मुद्रा, ब्रह्म बिभूति चढ़ावो ।
उलटा पवन जटा कर जोगी, अनहद नाद बजावो ॥२॥
सील कै पत्र छमा कै झोली, आसन दृढ़ करि कीजै ।
अनहद सब्द होत धुन अंतर, तहाँ अधर चित दीजै ॥३॥
सुकदेव ध्यान धर्‌यो घट भीतर, तहाँ हती कहँ माला ।
कहै कबीर भेष सोइ भूला, मूल छोड़ि गहि डाला ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

माई मैं तो दोनों कुल उँजियारी ॥टेक॥
सास ससुर को लातन मारी, जेठ की मूछ उखारी ।
राँध पड़ोसिन कीन्ह कलेवा, धरि बुढ़िया महतारी ॥१॥
पाँच पूत कोखिया के खाये, छठएँ ननद दुलारी ।
स्वामी हमरे सेज बिछावैं, सूतब गोड़ पसारी ॥२॥
पाँच खसम नैहर मैं कीन्हे, सोरह किये ससुरारी ।
वा मुंडो[1] का मूड़ मुड़ाऊँ, जो सरवर करै हमारी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आपै करो बिचारी ।
आदि अंत कोइ जानत नाहीं, नाहक जनम खुवारी ॥४॥

---

१ राँड़ ।

॥ शब्द १७ ॥

दिखलूँ मैं सजनवाँ, पियवा अनमोल के ॥ टेक ॥
दिखलूँ मैं कायानगर मैं, काया पुरुषवा खोजि के ।
काहे सजनवाँ बिराजे भवनवाँ, दूनौं नयनवाँ जोरिके ॥१॥
इँगला पिँगला सुषमन साधो, मनुवाँ आपन रोकि के ।
दसइँ दुअरिया लागी किवरिया, खोलो सब्द से जोरि के ॥२॥
रिमिझिमि रिमिझिमि मोती बरसै, हीरा लाल बटोरि के ।
लौका लौकै बिजुली चमकैं, झिंगुर बोलै झनकोरिके ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निर्बान के ।
या पद के जो अर्थ लगावै, सोई पुरुष अनमोल के ॥४॥

॥ चेतावनी ॥

॥ शब्द १ ॥

तोरी गठरी मैं लागे चोर, बटोहिया का रे सोवै ॥टेक॥
पाँच पचीस तीन है चोरवा, यह सब कीन्हा सोर-
बटोहिया का रे सोवै ॥१॥
जाग सबेरा बाट अनेड़ा, फिर नहिं लागै जोर-
बटोहिया का रे सोवै ॥२॥
भवसागर इक नदी बहतु है, बिन उतरे जाव बोर[1]-
बटोहिया का रे सोवै ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जागत कीजे भोर-
बटोहिया का रे सोवै ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

दिन रात मुसाफिर जात चला ॥ टेक ॥
जिनका चलना रैन सबेरा, सो क्यों गाफिल रहत परा ॥१॥

---

[1] डूब ।

चलना सहर का कौन भरोसा, इक दिन होइहै पवन कला ॥२॥
मात पिता सुत बंधू ठाढ़े, आड़ि न सकै कोइ एक पला ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, देह धरे का यही फला ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

जागु हो काया गढ़ के मवासी ॥ टेक ॥
जो बंदे तुम जागत रहि हौं, तुमहिं को मिलत सुहाग हो ॥१॥
जागत सहर मैं चोर न मूसै, नहिं लूटै भंडार हो ॥ २ ॥
अनहद सब्द उठै घट भीतर, चढ़ि के गगन गढ़ गाज हो ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सार सब्द टकसार हो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

बंदे जागो अब भइ भोर ।
बहुतक सोये जन्म सिराये, इहाँ नहीं कोइ तोर ॥१॥
लोभ मोह हंकार तिरिसना, संग लीन्हे कोर ।
पछिताहुगे तुम आदि अंत से, जइहौ कवनी ओर ॥२॥
जठर अगिन से तोहि उबारे, रच्छा कीन्ह्यो तोंर ।
एक पलक तुम नाम न सुमिरे, बड़े हरामीखोर ॥३॥
बार बार समझाय दिखाऊँ, कहा न माने मोर ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, धिग जीवन जग तोंर ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

का सोवे सुमिरन की बेरिया ॥ टेक ॥
जिन सिरजा तिन की सुधि नाहीं, झकत फिरो
झक झलनि झलरिया ॥१॥
गुरु उपदेस सँदेस कहत हैं, भजन करो चढ़ि
गगन अटरिया ॥२॥
नित उठि पाँच पचीस कै झगरा, ब्याकुल मोरी
सुरति सुँदरिया ॥३॥

कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भजन बिना तोरि
सूनी नगरिया ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

मन बौरा रे जग मैं भूल परी, सतगुरु सुधि बिसरी ॥टेक॥
आवत जात बहुत दिन बीते, जैसे रहट घरी।
निर्गुन नाम बिना पछितैहौ, फिरि फिरि येहि नगरी ॥१॥
मिथ्या बन तृस्ना के कारन, परजिव हतन करी।
मानुष जन्म भाग से पायो, सुधर के फिर बिगरी ॥२॥
जेहि कारन तुम निसि दिन धायो, धरे पाप मोटरी।
मातु पिता सुत बंधु सहोदर, सुगना कै ललरी[1] ॥३॥
जग सागर मन भँवर भुलाना, नाना बिधि घुमरी।
तेहि से काल दिया बँदिखाना, चौरासी कोठरी ॥४॥
कालहिं धाय चीन्हि नहिं पाये, बहु प्रकार भभरी[2]।
ज्यौं केहरि[3] प्रतिबिम्ब देखि के, कूप मैं कूदि परी ॥५॥
जोरि जारि बहुत पत गूँधे, भूसा की रसरी।
सत्त लोक की गैल बिसरि गे, परे जोनि जठरी[4] ॥६॥
सतगुरु सरन हरन भव संकट, ता मैं चित न धरी।
पानी पाथर देव गोहराये, दर दर भटक मरी ॥७॥
सुख सागर आगर अबिनासी, ता मैं चित न धरी।
पासहिं रहा चीन्हि नहिं पाये, सुधि बुधि सकल हरी ॥८॥
निः चिंता निः तत्त्व निहच्छर, डोरी नहिं पकरी।
जा घर से तुम या घर आये, घर की सुधि बिसरी ॥९॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिरलहिं सूझि परी।
सत्तनाम परवाना पावै, ता से काल डरी ॥१०॥

---

१ नलनी वा कल जिस मैं तोता फँस जाता है। २ हदस या सहम जाना।
३ शेर। ४ जठराग्नि का स्थान अर्थात उदर।

॥ शब्द ७ ॥

क्या सोवै गफलत के मारे, जागु जागु उठि जागु रे।
और तेरे कोइ काम न आवै, गुरु चरनन उठि लागु रे॥१॥
उत्तम चोला बना अमोला, लगत दाग पर दाग रे।
दुइ दिन का गुजरान जगत मैं, जरत मोह की आग रे॥२॥
तन सराय मैं जीव मुसाफिर, करता बहुत दिमाग रे।
रैन बसेरा करि ले डेरा, चलन सबेरा ताक रे॥३॥
ये संसार बिषय रस माते, देखो समुझि बिचार रे।
मन भँवरा तजि बिष के बन को, चलु बेगम के बाग रे॥४॥
कैंचुलि करम लगाइ चित्त मैं, हुआ मनुष ते नाग रे।
पैठा नाहिं समुझ सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे॥५॥
साहिब भजै सो हंस कहावै, कामी क्रोधी काग रे।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, प्रगटे पूरन भाग रे॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

बिदेसी सुधि करु अपनो देस॥ टेक॥
आठ पहर कहँवाँ तुम भूलो, छाड़ि देहु भ्रम भेस॥१॥
ज्ञान ठौर सम ठौर न पाओ, या जग बहुत कलेस॥२॥
जोगी जती तपी सन्यासी, राजा रंक नरेस॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सतगुरु के उपदेस॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

तुम तौ दिये नर कपट किवारी॥ टेक॥
वहि दिन कै सुधि भूलि गये हौ, कियो जो कौल करारी।
जाते भजन करौं दिन राती, गहिहौं सरन तुम्हारी॥१॥
बार बार तुम अरज कियो है, कष्ट निवारु हमारी।
यहाँ आइ कै भूलि परयो है, कीयो बहुत लबारी॥२॥
आपु भुलायो जगत भुलायो, सब को कियो सँघारी।
नाम भजे बिनु कौन बचावै, बहुत कियो मतवारी[1]॥३॥

---

१ मस्ती।

बार बार जंगल में धावै, आगि दियो परचारी ।
बहुत जीव तुम परलय कीन्हा, कस होय हाल तुम्हारी ॥४॥
तुम्हरे बदे[1] तो नरक बना है, अगिन कुंड में डारी ।
मार पीटि के जम लै डारै, तब को करत गोहारी ॥५॥
बिन गुरु भक्ति के माता कैसी, जैसी बाँझिन नारी ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भक्ती करो करारी ॥६॥

॥ शब्द १० ॥

मुसाफिर जैहौ कौनी ओर ॥ टेक ॥
काया सहर कहर है न्यारा, दुइ फाटक घनघोर ।
काम क्रोध जहँ मन है राजा, बसत पचीसो चोर ॥१॥
संसय नदी बहै जल धारा, बिषय लहर उठै जोर ।
अब का गाफिल सोवै बौरा, इहाँ नहीं कोइ तोर ॥२॥
उतर दिसा इक पुरुष बिदेही, उन पै करो निहोर ।
दाया लागै तब लै जैहैं, तब पावो निज ठौर ॥३॥
पाछल पैंड़ा समुझो भाई, ह्वै रहो नाम कि ओर ।
कहै कबीर सुनो हो साधो, नाहीं तो पैहौ झकझोर ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

सुल्तान बलख बुखारे का ॥ टेक ॥
जिनके ओढ़न साल दुसाला, नवो तार दस तारे का ।
सो तो लागे भार उठावन, नव मन गुदरा भारे का ॥१॥
जिन के खाना अजब सराहन[2], मिसरी खाँड़ छुहारे का ।
अब तो लागे बखत गुजारन, टुकड़ा साँझ सकारे[3] का ॥२॥
जा के संग कटक दल बादल, नौ सै घोड़ कँधारे का ।
सो सब तजि के भये औलिया, रस्ता धरे किनारे का ॥३॥

---

१ वास्ते, लिये। २ प्रशंसा योग्य। ३ सबेरे

चुनि चुनि कलियाँ सेज बिछावै, डासन[1] न्यारे न्यारे का।
सो मरदों ने त्याग दिया है, देखो ज्ञान बिचारे का ॥४॥
सोलह सै साहेलरि[2] छाड़े, साहिब नाम तुम्हारे का।
कहै कबीरा सुनो औलिया, फक्कर भये अखाड़े का ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

धुबिया बन का भया न घर का ॥ टेक ॥
घाटै जाय धुबिनिया मारै, घर मैं मारै लरिका ॥१॥
आज काल्ह आपै फुटि जाई, जैसे ढेल डगर का ॥२॥
भूला फिरै लोभ के मारे, जैसे स्वान सहर का ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भेद न कहो नगर का ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

भजन कर बीती जात घरी ॥ टेक ॥
गरभ बास मैं भगति कबूले, रच्छा आन करी।
भजन तुहार करब हम साहिब, पक्का कौल करी ॥१॥
वहँ से आय हवा जब लागी, माया अमल[3] करी।
दूध पिये मुसकात गोद मैं, किलकिल कठिन करी ॥२॥
खात पियत अँड़ात गली मैं, चर्चा वह बिसरी।
ज्वान भये तरुनी सँग माते, अब कहु कैसे करी ॥३॥
वृद्ध भये तन काँपन लागे, कंचन जात बही।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिरथा जनम गई ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

करो भजन जग आइ कै ॥ टेक ॥
गरभ बास मैं भक्ति कबूले, भूलि गए तन पाइ कै ॥१॥
लगी हाट सौदा कब करिहौ, का करिहो घर जाइ कै ॥२॥
चतुर चतुर सब सौदा कीन्हा, मूरुष मूल गँवाइ कै ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु के चरन चित लाइ कै ॥४॥

---

१ बिछौना। २ सहेली। ३ नशा

॥ शब्द १५ ॥

कोल्हुवा बना तेरा तेलिनी[1], पेरे संसार ॥ टेक ॥
करम काठ के कोल्हुवा हो, संसय परी जाठ[2] ।
लोभ लहर के कातर[3] हो, जग पाचर[4] लाग ॥१॥
तीरथ बरत के बैला हो, मन देहु नधाय[5] ।
लोक लाज के आँतरि[6] हो, उघरि चलै न कोय ॥२॥
तिरगुन तेल चुआवै हो, तेलहन[7] संसार ।
कोइ न बचे जोगी जती, पेरे बारम्बार ॥३॥
कुमति महल बसै तेलनी, नापै कडुवा तेल ।
दास कबीर दे हेला हो, देखो औरै खेल ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

सब्दै चीन्ह मिलै सो ज्ञानी ॥टेक॥
गावत गीत बजावत तालो, दुनिया फिरै भुलानी ।
खोटा दाम बाँधि के गाँठी, खोजै वस्तु हिरानी ॥१॥
पोथी बाँधि बगल में दाबे, थापै वस्तु बिरानी
मूल मंत्र के मरम न जानै, कथनी बहुत बखानी ॥२॥
आठो पहर लोभ में भूले, मोह चलै अगवानी ।
ये सब भूत प्रेत होइ धावैं, अगिला जनम नसानी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निरबानी ।
हंसा हमरे सब्द महरमी, सो परखैं निज बानी ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

तन बैरागी ना करो, मन हाथ न आवै ।
पुरुष बिहूनी नारि को, नित बिरह सतावै ॥१॥

---

१ माया। २ कोल्हू का खंभा। ३ पीढ़ा कोल्हू का जिस पर बैठ कर बैल को हाँकते हैं। ४ पच्चड़। ५ जातना। ६ रस्सी जिससे बैल को कोल्हू से नाथ देते हैं। ७ घानी।

चोवा चंदन अर्गजा, घसि अंग चढ़ावै।
रोकि रहै मग नागिनी, जुग जुग भरमावै ॥२॥
मान बड़ाई उर बसै, कछु काम न आवै।
अष्ट[1] कोट के भरम में, कस दरसन पावै ॥३॥
माया प्रान अकोर[2] दे, कर सतगुरु पूरा।
कहै कबीर तब बाचिहौ, जम कागद चीरा ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

जनम यहि धोखे बीता जात ॥टेक॥
जस जल अँचुली में भल सीझै।
छुटि गये प्रान जस तरवर पात ॥१॥
चारि पहर धंधा में बीते।
रैन गँवाई सोवत खाट ॥२॥
एकै पहर नाम को गहि ले।
नाम न गहौ तो कौने साथ ॥३॥
का लै आये का लै जावो
मन में देख हृदय पछितात ॥४॥
जम के दूत पकरि लै जैहैं।
जीभ ऐंठि के मरिहैं लात ॥५॥
कहै कबीर अबहि नर चेतो।
यह जियरा कै नहिं बिस्वास ॥६॥

॥ शब्द १९ ॥

भजो सतनाम अहो रे दिवाना ॥टेक॥
गुदरी तोरी रंग बिरंगी, धागा अहै पुराना।
वा दरजी से परिचै नाहीं, कैसे पैहौ ठिकाना ॥१॥
चाल चलै जस मैगल[3] हाथी, बोली बोलै गुमाना।
ऐहै जम्म पकरि लै जैहै, आखिर नर्क निसाना ॥२॥

---

१ पाँच तत्व और तीन गुन। २ चाट; घूस। ३ मस्त।

पानी क सुइँस ऐसन सरि जैहै, तब ऐहै परवाना ।
सिरजनहार बसै घट भीतर, तुम कस भरम भुलाना ॥३॥
लौका[1] लौकै बिजुली तड़पै, मेघ उठै घमसाना ।
कहै कबीर अमी रस बरसै, पीवत संत सुजाना ॥४॥

॥ शब्द २० ॥

हंसा हो यह देस बिराना ॥ टेक ॥
चहुँ दिसि पाँति बैठि बगुलन की, काल अहेरत[2]
साँझ बिहाना ॥१॥
सुर नर मुनी निरंजन देवा, सब मिलि कीन्हा
एक बँधाना ॥२॥
आपु बँधे औरन को बाँधे, भवसागर को कीन्ह पयाना॥३॥
काजी मुलना दुइ ठहराना, इनका कलिया लेत जहाना॥४॥
कोइकोइ हंसा गे सत लोकै, जिन पायो अमर परवाना ॥५॥
कहै कबीर और ना जैहै, कोटि भाँति हो चतुर सयाना॥६॥

॥ शब्द २१ ॥

इक दिन परलै होइ है हंसा, अबहिं सम्हारो हो ॥टेक॥
ब्रह्मा विस्नु जब ना रहै, नहिं सिव कैलासा हो ॥१॥
चाँद सुरज जब ना रहै, नहिं धरनि अकासा हो ॥२॥
जोत निरंजन ना रहै, नहिं भोग भगवाना हो ॥३॥
सत बिस्नू मन मूल है, परलय तर आइ हो ॥४॥
सोरह संख जुग ना रहै, नहिं चौदह लोका हो ॥५॥
अंड पिंड जब ना रहै, नहिं यह ब्रह्मंडा हो ॥६॥
कबीर हंसा पुरुष मिले, मोरे और न भावै हो ॥७॥
कोटिन परलय टारि कै, तोहि आँच न आवै हो ८॥

---

१ बिजली। २ शिकार करता है।

॥ उपदेश ॥

॥ शब्द १ ॥

बिरहिनी सुनो पिया की बानी ॥ टेक ॥
सहज सुभाव मूल रहु रहनी, सुनो सब्द सुत तानी ।
सील सँतोष कै बाँधो कामरि, होइ रहो मगन दिवानी ॥१॥
दुइ फल तोरि मिलो हंसन मैं, सोई नाम निसानी ।
तत्त भेष धारे जब बिरहिन, तब पिव के मन मानी ॥२॥
कुमति जराइ सुमति उजियारी, तब सूरति ठहरानी ।
सो हंसा सुख सागर पहुँचे, भरै मुक्त जहँ पानी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निरबानी ।
जो या पद की निंदा करिहै, ता की नरक निसानी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

सम्हारो सखी सुरति न फूटे गगरी ॥ टेक ॥
कोरा घड़ा नई पनिहारिनि, सील सँतोष की
लागी रसरी ॥१॥
एक हाथ करवा दुसर हाथ रसरी, त्रिकुटी महल
की डगरी पकरी ॥२॥
निसु दिन सुरति घड़ा पर राखो, पिया मिलन
की जुगती यहि री ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, पिय तोर बसत
अमरपुर नगरी ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

बिना भजे सतनाम गहे बिनु, को उतरै भवपारा हो ॥टेक॥
पुरइनि[1] एक रहै जल भीतर, जलहिं मैं करत पुकारा हो ।
वा के पत्र नीर नहिं लागै, ढरकि परै जस पारा हो ॥१॥

---

१ कँवल के पेड़ ।

तिरिया एक रहै पतिबरता, पिय का बचन न टारा हो।
आपु तरै औरन को तारै, तारै सकल परिवारा हो ॥२॥
सूरा एक चढ़े लड़ने को, पाछे पग नहिं धारा हो।
वा के सुरति रहे लड़ने में, प्रेम मगन ललकारा हो ॥३॥
नदिया एक अगम्म बहतु है, लख चौरासी धारा हो।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, संत उतरिगे पारा हो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

अँधियरवा में ठाढ़ गोरी का करलू ॥ टेक ॥
जब लग तेल दिया मैं बाती, येहि अँजोरवा
बिछाय घलतू ॥१॥
मन का पलँग सँतोष बिछौना, ज्ञान क तकिया
लगाय रखतू ॥२॥
जरि गा तेल बुझाय गइ बाती, सुरति मैं मुरति
समाय रखतू ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, जोतिया में जोतिया
मिलाय रखतू ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जागि कै जनि सोवो बहुरिया ॥ टेक ॥
जो बहुरी तुम आइ जगत मैं, जगत हँसै तुम
रोवो बहुरिया ॥१॥
जो बहुरी तुम बनिहौ बनाई, अपने हाथ जनि
खोवो बहुरिया ॥२॥
निसु दिन परो पाप सागर मैं, लै साधन मैं धोवो
बहुरिया ॥३॥
चाखो नाम अमी रस प्याला, तेज[1] बिषै रस
मोवो बहुरिया ॥४॥

---

१ तज या छोड़ कर।

कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सत्तनाम जपि
लेवो बहुरिया ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

सुन सुमति सयानी, तोहि तन सारी कौन दई ॥ टेक ॥
रँगरेज न चीन्हो, रँगरेज कछू लखि ना परै ॥१॥
मिलो मिलो सतगुरु से, धर्मराय नहिँ खूँट गहै ॥२॥
जौ लौँ अटक न छूटै, तौ लौँ भर्म खुवार करी ॥३॥
दुबिधा के मारे, सुर नर मुनि बेहाल भये ॥४॥
कहि कहि समुझाऊँ, तोहि मन गाफिल ख़बर नहीं ॥५॥
भवसागर नदिया, साहिब कबीर गुरु पार करी ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

ऐसी रहनि रहो बैरागी।
सदा उदास रहै माया से, सत्तनाम अनुरागी ॥१॥
छिमा की कंठी सील सरौनो[1], सुरति सुमिरनी जागी।
टोपी अभय भक्ति माथे पर, काल कल्पना त्यागी ॥२॥
ज्ञान गूदरी मुक्ति मेखला, सहज सुई लै तागी।
जुगति जमात कूबरी करनी, अनहद धुनि लौ लागी ॥३॥
सब्द अधार अधारी कहिये, भीख दया की माँगी।
कहै कबीर प्रीति सतगुरु से, सदा निरंतर लागी ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

सोइ बैरागी जिन दुबिधा खोई ॥ टेक ॥
टोपी तंत सुमिरनी चितवे, सेली अनहद होई।
नाम निरंतर चोलना पहिरे, सो लै सुरति समोई ॥१॥
छिमा भाव सहज की चोबी[2], झोरी ज्ञान की डोरी।
दिल माँगे तो सौदा कीजे, ऊँच नीच ना कोई ॥२॥

---

१ कान में लगाने की डाट। २ छड़ी।

भुँइ कर आसन अकास को ओढ़न, जोति चंद्रमा सोई ।
रैन पौन दुइ करै रखवारी, दृढ़ आसन करि सोई ॥३॥
उनमुनि दृष्टि उदास जगत मैं, भरम कै महल ढहाई ।
करि असनान सोहं सागर मैं, बिमल अनहद धुनि होई ॥४॥
एक एक से मिलै रैन मैं, दिल की दुबिधा धोई ।
कहै कबीर अमर घर पावै, हंस बिछोह न होई ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

अगम की सतगुरु राह उघारी ॥ टेक ॥
जतन जतन जो तन मन सिरजे, सुखमनि सेज सँवारो ।
जागत रहै पलक नहिं लागै चाखत अमल करारो ॥१॥
सुमति क अंजन भरि भरि दीजै, मिटै लहर अँधियारी ।
छूटै त्रिबिधि भरम भय जन का, सहजै भइ उँजियारो ॥२॥
ज्ञान गली मुक्ती के द्वारे, पच्छिम खुलै किवारी ।
नौबत बाजि धुजा फहरानी, सूरति चढ़ी अटारो ॥३॥
एही चाल मिलो साहिब से, मानो कहो हमारी ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, चेत चलो नर नारी ॥४॥

॥ माया ॥

॥ शब्द १ ॥

साधो बाघिन खाइ गइ लोई ॥ टेक ॥
अंजन नैन दरस चमकावै, हँसि हँसि पारै गारी ।
लुभुकि लुभुकि चरै अभि अंतर, खात करेजा काढ़ी ॥१॥
नाक धरे मुलना कान धरे काजी, औलिया बछरू पछारी
छत्र भूपती राम बिडारा, सोखि लीन्ह नर नारी ॥२॥
दिन बाघिन चकचौंधी लावै, राति समंदर सोखी ।
ऐसन बाउर नगरि के लोगवा, घर घर बाघिन पोसी ॥३॥

इन्द्राजित औ ब्रह्मादिक दुनि, सिव मुख बाघिन आई।
गिरि गोबरधन नख पर राख्यो[1], बाघिन उनहुँ मरोरी ॥४॥
उतपति परलै दोउ दिसि बाघिन, कहै कबीर बिचारी।
जो जन सन्त के भजन करत है, ता से बाघिन न्यारी ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

यह समधिन जग ठगे मजगूत[2] ॥ टेक ॥

यह समधिन के मात पिता नहिं, और धिया ना पूत ॥१॥
यह समधिन के गाँव ठाँव नहिं, करत फिरै सगरे अजगूत[3] ॥२॥
ठगत ठगत यह सुर पुर खाये, ब्रह्मा बिस्नु महेस को खात ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, ठगनी कै अंत काहु नहिं पात ॥४॥

॥ मिश्रित ॥

॥ शब्द १ ॥

ठगिया हाट लगाये भवसागर तिरवा ॥ टेक ॥

आगे आगे पंडित चालत, पाछे सब दुनियाई ॥१॥
कोटिन बेदे[4] स्वान के लागे, मिटे न पूँछ टेढ़ाई ॥२॥
इक दुइ होय ताहि समझाओं, सृष्टि गई बौराई ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, को बकि मरै लबराई ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

कुमतिया दारुन नितहिं लरै ॥ टेक ॥

सुमति कुमतिया दूनों बहिनी, कुमति देखि कै सुमति डरै ॥१॥
औषद न लागै दुआई न लागै, घूमि घूमि जस बीछु चढ़ै ॥२॥
कितना कहौं कहा नहिं मानै, लाख जीव नित भच्छ करै ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह बिष संत के झारे झरै ॥४॥

---

१ श्रीकृष्ण। २ मज़बूत। ३ अचरज। ४ विधि, भाँति।

॥ शब्द ३ ॥

नर तोहिं नाच नचावत माया ।
नाम हेत कबहीं नहिं नाचे, जिन यह सिरजल काया ॥१॥
सकल बटोर करै बाजीगर, अपनी सुरति नचाया ।
नाचत माथ फिरो बिषयन सँग, नाम अमल बिसराया ॥२॥
भुगते अपनी करनी करि करि, जो यह जग में आया ।
नाम बिसारि यही गति सब को, निसु दिन भरम भुलाया ॥३॥
जेहि सुमिरे ते अचल अछय पद, भक्ति अखंडित पाया ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भक्त अमर पद पाया ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

सखी हो सुनि लो हमरो ज्ञाना ॥ टेक ॥
मात पिता घर जन्म लियो है, नैहर भे अभिमाना ।
रैन दिवस पिय संग रहत है, मैं पापिनि नहिं जाना ॥१॥
मात पिता घर जन्म बीति गे, आय गवन नगिचाना ।
का लै मिलैं पिया अपने से, करिहौं कौन बहाना ॥२॥
मानुष जन्म तो बिरथा खोये, सत्तनाम नहिं जाना ।
हे सखि मेरो तन मन काँपै, सोई सब्द सुनो काना ॥३॥
रोम रोम जा के पद परगासा, ता को निर्मल ज्ञाना ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, करो इस्थिर मन ध्याना ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

पायो निज नाम गले कै हरवा ॥ टेक ॥
सतगुरु कुंजी दई महल की,
जब चाहो तब खोल किवरवा ।
सतगुरु पठवा अगवनिहरवा[१],
छोटि मोटि डुलिया चारि कहरवा ॥१॥

---

१ बुलाने वाला ।

प्रेम प्रीति की पहिरि चुनरिया,
निहुरि निहुरि नाचौं दरबरिया।
यह मेरो ब्याह यही मेरो गवना,
कहै कबीर बहुरि नहिं अवना ॥२॥

॥ शब्द ६ ॥

बिदेसी चलो अमरपुर देस।
छाड़ो कपट कुटिल चतुराई, छाड़ो यह परदेस ॥१॥
छाड़ो काम क्रोध औ माया, सुनि लीजे उपदेस।
ममता मेटि चलो सुख सागर, काल गहै नहिं केस ॥२॥
तीनि देव पहुँचै नहिं तहवाँ, नहिं तहँ सारद सेस।
लोक अपार तहँ पार न पावे, नहिं तहँ नारि नरेस ॥३॥
हंसा देस तहाँ जा पहुँचे, देखो पुरुष दरेस[1]।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, मानि लेहु उपदेस ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

परदेसिया तू मोर कही मानु हो ॥टेक॥
पाँच सखी तोरे निसु दिन ब्यापै, उनके रूप पहिचान हो ॥१॥
ब्रम्हा बिस्नु महेसुर देवा, घर घर ठाकुर दिवान हो ॥२॥
तिरगुन तीन मता है न्यारा, अरुझो सकल जहान हो ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आदि सनेही मोहिं जान हो ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मोर पियवा जवान मैं बारी ॥टेक॥
चारि पदारथ जगत बीचि मैं, ता मैं बरतन हारी ॥१॥
मेरी कही पिय एक न मानै, जुग जुग कहि के हारी ॥२॥
ऊँची अटरिया कैसे क चढ़बौं, बोलै कोइलिया कारी ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, केहू न बेदन टारी ॥४॥

---

[1] दर्शन।

॥ शब्द ९ ॥

संतो चूनर मोर नई ।
पाँच तत्त कै बनल चुनरिया, सतगुरु मोहिँ दई ॥१॥
रात दिवस के ओढ़त पहिरत, मैली अधिक भई ।
अपने मन संकोच करत है, किन रँग बोर दई ॥२॥
बड़े भाग हैं चूनर के रे, सतगुरु मिले सही ।
जुगन जुगन की छुटि मैलाई, चटक से चटक भई ॥३॥
साहिब कबीर यह रंग रचो है, संतन कियो सही ।
जो यह रँग की जुगत बतावै, प्रेम मेँ लटक रही ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

पहिरो संत सुजान, भजन कै चोलनियाँ ॥ टेक ॥
गुरु हीरा करो हार, प्रेम कै भूलनियाँ[1] ।
कंकन रतन जड़ाव, पचीसो लागे घूँघुरियाँ ॥१॥
पूरन प्रेम अनंद, धुनन की झालरियाँ ।
दही लै निकरी ग्वालिन, सुरत के डागरियाँ ॥२॥
है कोइ संत सुजान, करै मोरी बोहनियाँ ।
चलो मोरे रंग महल मेँ, करोँ तोरी बोहनियाँ ॥३॥
लगि सेज सँवारे, छुटि गई तन तापनियाँ ।
मिले दास कबीरा, बहुरि न आवै संसारनियाँ ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

साधो मन कुँजड़ी नीक नियाई[2] ॥ टेक ॥
तन बारी तरकारी करि ले, चित करि ले चौराई ।
गुरू सब्द का बैंगन करि ले, तब बनिहै कुँजड़ाई ॥१॥
प्रेम के परवर धरो डलिया में, आदि की आदी लाई ।
ज्ञान के गजरा दृढ़ कर राखो, गगन मेँ हाट लगाई ॥२॥

---

१ नथ । २ न्यायकारी, सुकर्मी ।

लौ की लौकी धरो पलरे मैं, सील कै सेर चढ़ाई ।
लेत देत के जो बनि आवै, बहुरि न हाट लगाई ॥३॥
मन धोओ दिल जान से प्यारे, निर्गुन बस्तु लखाई ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सिंधु मैं बुंद समाई ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

गुँगवा नसा पियत भो बौरा ॥ टेक ॥
पी के नसा मगन होइ बैठा, तिरथ बरत नहिं दौड़ा ॥१॥
खोलि पलक तीन लोके देखा, पौढ़ि रहे जस पौढ़ा ॥२॥
बड़े भाग से सतगुरु मिलिगे, घोरि पियाये जस मोहरा[1] ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, गया साध नहिं बहुरा ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

नाम बिना कस तरिहै, भूला माली ॥ टेक॥
माटी खोदि के चौरा बाँधा, ता पर दूब चढ़ाई ।
सो देवता को कूकुर चाटै, सो कस जाग्रत भाई ॥१॥
पत्थर पूजे जो हरि मिलते, तौ हम पुजत पहारा[2] ।
घर की चक्की कोइ न पूजै, जा कै पीसल खाय संसारा ॥२॥
भूला माली फूलहि तोरै, फूल पत्र मैं जीव ।
जो देवता को फूल चढ़ाये, सो देवता निरजीव ॥३॥
पत्थर काटि कै मुरत बनाये, देइ छाती पर लात ।
वा देवा मैं शक्ति जो होती, गढ़नहार को खात ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह सब लोक तमासा ।
यह तन जात बिलम ना लागे, (जस) पानो पड़े बतासा ॥५॥

॥ शब्द १४ ॥

कोइ ऐसा देखा सतगुरु संत सिपाही ॥ टेक ॥
ब्रह्म तेज की प्रेम कटारी, धीरज ढाल बनाई ।
त्रिकुटी ऊपर ध्यान लगाई, सुरति कमान चढ़ाई ॥१॥

---

१ ज़हर मोहरा—बिष दूर करने की दवा । २ पहाड़ ।

सिँगरा[1] सत्त समुझि कै बाँधो, तन बंदूक बनाई ।
दया प्रेम का अड़बंद[2] बाँधो, आतम खोल लगाई ॥२॥
सत्त नाम लै उड़ै पलीता, हर दम चढ़त हवाई[3] ।
दम के गोला घट भीतर मेँ, भरम के मुरचा ढहाई ॥३॥
सार सब्द का पटा लिखावो, चलत जगीरी पाई ।
दया मूल संतोष धिरज लै, सहज काल टरि जाई ॥४॥
सील छिमा की पारस पथरी, चित चकमक चमकाई ।
पहिले मारे मोह के मुरचा, दुबिधा दूर बहाई ॥५॥
अविगत राज बिबेक भये हैँ, अजर अमर पद पाई ।
ममता मोह क्रोध सब भागे, लायो पकरि मन राई ॥६॥
पाँच पचीस तीन को बस करि, फेरी नाम दुहाई ।
निर्मल पद निरबान गुरू का, संत सुरंग लगाई ॥७॥
चुगुल चोर सब पकरि मँगाये, अनहद डंक बजाई ।
साहिब कबीर चढ़े गढ़ बंका, निरभय बाज बजाई ॥८॥

॥ शब्द १५ ॥

अवधू चाल चलै सो प्यारा ॥ टेक ॥
निसु दिन नाम बिदेही सुमिरै, कबहुँ न सूरति टारा ॥१॥
सुपने नाम न भूलै कबहूँ, पलक पलक ब्रत धारा ॥२॥
सब साधुन से इक ह्वै रहवे, हिलि मिलि सब्द उचारा ॥३॥
कहै कबीर सुनो हो अवधू, सत्त नाम गहि तारा ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

निरंजन धन तेरो परिवार ॥ टेक ॥
रंग महल मेँ जंग खड़े हैँ, हवलदार औ सूबेदार ।
धूर धूप मेँ साध बिराजे, काहे को करतार ॥१॥
बिस्वा ओढ़े खासा मलमल, मोती मूँगा के हार ।
पतिब्रता को गजी जुरै नाहिँ, रूखा सूख अहार ॥२॥

---

१ बारूतदान । २ लँगोट । ३ अग्निबान ।

पाखंडी कौ आदर जग मँ, साच न मानै लबार ।
साचा मानै साध बिबेकी, झूठा मानै गँवार ॥३॥
कहै कबीर फकीर पुकारी, सब्द गहो टकसार ।
साचि कहैं जग मारन धावै, झूठा है संसार ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

काया नगर मँ अजब पेच है, बिरले सौदा पाया हो ॥टेक॥
ओहि दुकनिया कै तीन सौदागर, पाँच पचीस भरि लाया हो
खाँड़ कपूर एक सँग लादै, कहु कैसे बिलमाया हो ॥१॥
ऊँची दुकनिया क नीची दुवरिया, गाहक फिरि फिरि जाई हो ।
चतुर चतुर सब सौदा कीन्हा, मूरुख भाव न पाई हो ॥२॥
सार सब्द के बने पालरा, सत कै डाँड़ी लागी हो ।
सतगुरु समरथ घट सौदागर, जो तौलत बनि आवै हो ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, बिरले सौदा पाया हो ।
आपु तरै जग जिव मुक्तावै, बहुरि न भवजल आवै हो ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

कोइ कहा न मानै हम काहे के कही ॥टेक॥
पूजि आतमा पुजै पषाना, ताते दुनिया जात बही ॥१॥
पर जिव मारि आपन जिव पालै, ता कै बदला तुरत चही ॥२॥
लख चौरासी जीव जंतु है, ता मैं रमिता हमहिं रही ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, सत्त नाम तुम काहे न गही ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये ॥ टेक ॥
एक जोइनि से चार बरन भे, हाड़ मास जिव गूदा ।
सुत परि दूजे नाम धराये, वा को करम न छूटा ॥१॥
छेरी खाये भेड़ी खाये, बकरी टीका टाके[1] ।
सरब माँस एक है पंडित, गैया काहे बिलगाये ॥२॥
कन्या जाति जाति को बेचत, कौने जाति कहाये ।
आपन कन्या बेचन लागे, भारी दाम चढ़ाये ॥३॥
जहँ लगि पाप अहै दुनियाँ मैँ, सो सब काँध चढ़ाये ।
कहै कबीर सुनो हो पंडित, घर चौरासी मा छाये ॥४॥

॥ शब्द २० ॥

पंडित सुनहु मनहिँ चित लाई ॥ टेक ॥
जोई सूत कै बन्यो जनेऊ, ता की पाग[2] बनाई ।
धोती पहिरि के भोजन कीन्हा, पगरी मैँ छूत लगाई ॥१॥
रकत माँस को दूध बनो है, चमड़ा धरी दुराई ।
सोई दूध से पुरखा तरिगे, चमड़ा मैँ छूत लगाई ॥२॥
जनम लेत उढ़री[3] अबला[4] के, लै मुख छीर पियाई ।
जब पंडित तुम भये गियानी, चालत पंथ बड़ाई ॥३॥
कहै कबीर सुनो हो पंडित, नाहक जग मैँ आई ।
बिना बिबेक ठौर ना कतहूँ, बिरथा जनम गँवाई ॥४॥

॥ शब्द २१ ॥

पंडित बाद बेद से झूठा ।
राम के कहे जगत तरि जाई, खाँड़ कहे मुख मीठा ॥१॥
पावक कहे पाँव जो जरई, जल कहे त्रिषा बुझाई ।
भोजन कहे भूख जो भागै, तब दुनिया तरि जाई ॥२॥

---

१ बकरा को बलिदान देने के पहिले उस के रोरी का टीका लगा देते हैं ।
२ पगड़ी । ३ धरूक, सुरैतिन । ४ स्त्री ।

नर के पास सुआ आइ बोलै, गुरु परताप न जाना।
जो कबही उड़ि जात जँगल मैं, बहुरि सुरत नहिँ आना ॥३॥
बिन देखे बिन दरस परस बिन, नाम लिये का होई।
धन के कहे धनी जो होई, निरधन रहै न कोई ॥४॥
साँची हेत बिषै माया से, सतगुरु सब्द की हाँसी।
कहै कबीर गुरू के बेमुख, बाँधे जमपुर जाहीं ॥५॥

॥ शब्द २२ ॥

गाम मैं भेद है साधो भाई ॥ टेक ॥
जो मैं जानूँ साचा देवा, खट्टा मीठा खाई।
माँगि पानी अपने से पीवै, तब मेरे मन भाई ॥१॥
ठुक ठुक करिके गढ़े ठठेरा, बार बार तावाई[1]।
वा मूरत के रहो भरोसे, पछिला धरम नसाई ॥२॥
ना हम पूजी देवी देवा, ना हम फूल चढ़ाई।
ना हम मूरत धरी सिँघासन, ना हम घंट बजाई ॥३॥
कासी मैं जो प्रान तियागे, सो पत्थर भे भाई।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, भरमे जन भकुवाई[2] ॥४॥

---

१ आग में ताव देकर। २ भकुआ या सिड़ी होकर।

संतबानी पुस्तकमाला

[जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब की साखी संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली तीसरा भाग	।=)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	।=)
कबीरसाहिब की अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १ ...	१=)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	१=)
तुलसी साहब का रत्नसागर	१।-)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	१॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण पहला भाग ...	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी"	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग २ 'शब्द"	१।)
सुन्दर बिलास	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	॥।)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त सवैया ...	॥।)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	॥।)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग	॥।-)
जगजीवन साहिब की बानी, दूसरा भाग	॥।-)
दूलन दास जी की बानी	।)॥

चरनदास जी की बानी, पहला भाग	॥।-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	॥।)
गरीबदास जी की बानी	१।-)
रैदास जी की बानी	॥।)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	।≡)
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	।-)
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी	।≡)
भीखा साहिब की शब्दावली	॥=)॥
गुलाल साहिब की बानी	॥=)।
बाबा मलूकदास जी की बानी	।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	-)
यारी साहिब की रत्नावली	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसागर	।)
केशवदास जी की अमीघूँट	-)।
धरनी दास जी की बानी	।=)
मीरा बाई की शब्दावली	॥)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश	।≡)॥
दया बाई की बानी	।)
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी)	१॥)
(प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित)	
संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द)	२)॥
[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं है]	
कुल	२३।-)
अहिल्या बाई	≡)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।

हिन्दी पुस्तकमाला।

नवकुसुम—(प्रथम गुच्छ) इस पुस्तक में कई छोटी बड़ी कहानियाँ जो बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद हैं संग्रहीत हैं। पढ़िये और और घरेलू ज़िन्दगी का आनन्द लूटिये। मूल्य ॥)

सचित्र विनय पत्रिका—यह पुस्तक भी हिन्दी संसार में एक अमुल्य वस्तु है। और इसकी टीका पं० महाबीर प्रसाद मालवी "बीर" ने बड़ी ही सरल भाषा में की है। इसमें ५ चित्र भी हैं। व छपाई बड़े अक्षरों में बहुत ही सुन्दर हुई है। गोस्वामीजी की इस दुर्लभ पुस्तक का दाम मय टीका के सिर्फ़ २॥) है सजिल्द ३)

करुणा देवी—औरतों को पढ़ाइये, बहुत ही रोचक और शिक्षाप्रद उपन्यास है। मूल्य ॥-)

हिन्दी कवितावली—यह उत्तम कविताओं का संग्रह बालक बालिकाओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य -)

हिन्दी महाभारत—सरल शुद्ध हिन्दी में रंग बिरंगे चित्रों के साथ अभी प्रकाशित हुआ है। सुन्दर कथा कथानकों के अतिरिक्त आदि में इन्द्र प्रस्थ और हस्तिनापूर के राजाओं की एक विस्तृत वंशावली भी दी गई है। पढ़ने पर आप स्वयं प्रशंसा करने लगेंगे। सर्व साधारण को इस धार्मिक एवं ऐतिहासिक। ग्रन्थ का प्रचार होने के लिये, केवल लागत मात्र। मूल्य ३)

गीता—(पाकेट एडिशन) श्लोक और उनका सरल हिन्दी में अनुवाद है। अन्त में गूढ़ शब्दों का कोश भी है। मूल्य ॥≈)

उतर ध्रुव की भयानक यात्रा—(सचित्र) इस उपन्यास को पढ़ कर देखिये कैसी अच्छी सैर है। मूल्य ॥)

सिद्धि—यथा नाम तथा गुणः। पढ़िये और अपने अनमोल जीवन को सुधारिये। ॥)

महारानी शशिप्रभा देवी—क्या ही विचित्र उपन्यास है; स्त्रियों के लिये तो यह एक आदशर्श है। इसमें यह दिखलाया गया है कि पति के सुख के लिये पत्नी ने किस तरह आत्म त्याग किया है। स्त्रियों को यह किताब १ दफे अवश्य पढ़नी चाहिये यह किताब एक बार हाथ में लेने से फिर रखने की इच्छा नहीं होती। मूल्य १।)

सचित्र द्रोपदी—पुस्तक में देवी द्रोपदी के जीवन चरित्र का अति उमत्त चित्र खींचा गया है। पुस्तक प्रत्येक भारतीय के लिये उपयोगी है। मूल्य ॥)

कर्मफल—नया छपा है और क्या ही उत्तम उपन्यास है। मूल्य ॥।)

दुःख का मीठा फल—नाम ही से समझ लीजिये। मूल्य ॥)।